IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

नगरीय परिवारों के उत्तरदाताओं का सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का अध्ययन

डॉ. शाहेदा सिद्दीकी
प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

शोध–सारांश :–

किसी सामाजिक शोध में सामाजिक एवं आार्थिक पृष्ठभूमि एक आवश्यक आधार तैयार करती है। शोध इस मान्यता पर आधारित है कि व्यक्ति के व्यवहार, क्रियाएं, अभिवृत्ति, मूल्य तथा वैचारिक दृष्टिकोण उसके सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश से प्रभावित होती है। सामाजिक पृष्ठभूमि व्यक्ति जीवन के उन मूलभूत गुणों का समुच्चय है जो उसे सामाजिक सदस्य के रूप में प्रतिस्थापित करता है। सामाजिक जीवन में सामाजिक प्रस्थिति का महत्वपूर्ण स्थान है, व्यक्ति के सामाजिक प्रस्थिति में परिवर्तन होने से उसकी भूमिका में परिवर्तन होने की सम्भावना बढ़ जाती है।

मुख्य शब्द :– महिला, परिवार, भूमिका, सामाजिक संगठन, आर्थिक, वैचारिक इत्यादि।

परिचय :–

प्रस्तुत अध्ययन नगरीय समुदाय के परिवारों के बदलते स्वरूप पर आधारित है प्रत्येक समााज में परिवार की अपनी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है। यही व्यक्ति के व्यवहार, विचार, मूल्यों को निर्धारित करते है जो उस समाज के स्वरूप का निर्माण करता है। दुर्खीम (1962) एवं एण्डरसन ने भी अपने अध्ययनों मे स्पष्ट किया है कि सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि का उसके मानवीय व्यवहार में अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध है। कोई भी अध्ययन सामाजिक–सांस्कृतिक प्रक्रियाओं, मनोवृत्तियों और व्यवहार के प्रतिमानों के संदर्भ में सही विश्लेषण तभी प्रस्तुत कर सकता है जब अध्ययन से सम्बन्धित उत्तरदाताओं के विषय में सामान्य जानकारी पूर्ण रूप से ज्ञात हो। अतः प्रस्तुत अध्यान में शोधकर्ता द्वारा परिवार के उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित विशेषताओं जैसे–आयु, लिंग, धर्म, शैक्षणिक स्थिति, जातीय प्रस्थिति, वैवाहिक प्रस्थिति, परिवार की स्वरूपगत स्थिति, परिवार की प्रति व्यक्ति आय, उनके आवासीय प्रतिमान की स्थिति, मासिक आय सम्बन्धी तथ्य एवं परिवार के मुख्य व्यवसाय सम्बन्धी आकड़ों का सारणियों के माध्यम से विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

उत्तरदाताओं का वर्तमान आयु–

आयु का व्यक्ति के जैविक विशेषता संबंधी जीवन का महत्वपूर्ण घटक है। यह व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक विकास की स्थिति को प्रकट करती है। व्यक्ति की उम्र तथा उसके अनुभवों से उसके सामाजिक–आर्थिक जीवन की स्थिति ज्ञात होती है। समाज में जिस आयु वर्ग की अधिकता होती है उसी आधार पर समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति, परम्परा एवं मूल्य तथा उनमें नवीन परिवर्तन की प्रवृत्ति एवं विचारधारा प्रदर्शित होती है। बदलते परिवेश एवं नगरीकृत युग में युवा पीढ़ी के वर्चस्व को नकारा नही जा सकता है। अतः आयु को एक महत्वपूर्ण सामाजिक कारक के रूप में में देखा जाना चाहिए, जो समाज में व्यक्ति की प्रस्थिति तथा भूमिका को परिभाषित करती है?

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-15570

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

सारणी संख्या –1 आयु के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रमांक	आयु (वर्ष)	संख्या	प्रतिशत
01	40 तक	9	18
02	41 से 55	27	54
03	55 ज्यादा	14	28
योग –		**50**	**100**

उपर्युक्त सारणी संख्या–1 में आयु के आधार पर उत्तरदाताओं को तीन आयु–समूहों मे विभाजित किया गया है। जिससे यह निष्कर्ष निकल कर आता है कि आधे से अधिक अर्थात 53.4 प्रतिशत उत्तरदाता 41 से 55 वर्ष के बीच के पाये गये है, जबकि 22.8 प्रतिशत उत्तरदाता 40 वर्ष तक के है तथा 23.8 प्रतिशत उत्तरदाता 55 वर्ष से ज्यादा के है। अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि प्रतिदर्शित आधे से अधिक व्यक्ति की आयु 41–55 वर्ष के पाये गये है जो मध्यम आयु समूह का प्रतिनिधित्व करता है। सांख्यिकी परिकलन के अनुसार कुल चयनित उत्तरदाताओं का औसत आयु मानक विचलन के साथ (48.69 ± 10.52) है।

उत्तरदाताओं की लिंग, धर्म एवं जाति वर्ग समूह के आधार पर स्थिति :–

लिंग–सामाजिक जनांकिकी में लिंग वर्ग का विशेष महत्व है। समाज में महिला एवं पुरुष में भिन्नता एक जैविक पक्ष तक सीमित नहीं बल्कि एक सामाजिक सांस्कृतिक और व्यक्तिगत निर्माण है। लिंग सम्बन्ध अर्थात स्त्रियों एवं पुरुषों की भूमिका सम्बन्धी विचारों में भिन्न संस्कृति के कारण समाज में अन्तर दिखाई पड़ता है। सामाजिक जीवन के कई क्षेत्रों में लिंग की रचना और अभिव्यक्ति की जाती है। यह संस्कृति विचारधारा और तार्किक धारणाओं तक सीमित नहीं है। घर में लैंगिक भ्रम विभाजन से लेकर श्रम–बाजार तक, राज व्यवस्था में, कामवृत्ति भावना में, हिंसा की रचना में और सामाजिक संगठन के कई पक्षों में लैंगिक सम्बन्धों की रचना होती है। अध्ययन के दृष्टिकोण से लिंग सम्बन्धी आकड़े महत्वपूर्ण पक्ष रखते है। जिससे समाज में संतुलन की स्थिति एवं प्रस्थिति का पता चलता है।

सारणी संख्या–2 लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रमांक	लिंग	संख्या	प्रतिशत
1.	**पुरुष**	**179**	**55.9**
2.	**महिला**	**141**	**44.1**
योग –		**320**	**100**

उपर्युक्त सारणी संख्या 2 में लिंग के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत किया गया हैं। लिंग के आधार पर अध्ययन की समस्त ईकाई में पुरुष एवं स्त्री को दर्शाया गया है। जिसमें 55.9 प्रतिशत पुरुष तथा 44.1 प्रतिशत महिलाएं है। धर्म– प्रत्येक समाज में सदस्यों के विचारों और व्यवहारों को नियंत्रित व निर्देशित करने में अन्य संस्थाओं की तरह धर्म भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मैक्सबेबर ने भारतीय समाज में धर्म की भूमिका को स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''जन्म से लेकर मृत्यु तक प्रत्येक भारतीय का जीवन धर्म–प्रवण था। अतः उसके समस्त कर्त्तत्य एवं कर्म, धर्म से ही उत्प्रेरित होकर गतिशील होते थे जो उसके परिवार और समाज को संगठित करने में महत्वपूर्ण योगदान करते है।'' धर्म व्यक्ति के सामाजिक–आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है समाज की संस्कृति के मौलिक आधारों की संरचना धर्म पर आधारित होती है। दुर्खीम का कथन है कि

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

'चिन्तन के सभी प्रमुख वैचारिक रूप, कारण, शक्ति, समूह और काल आदि धर्म में उत्पन्न होते है, वे धार्मिक विचारों के उत्पाद होते है। अतः धर्म मानव का स्वभावगत गुण है जो भारतीय संस्कृति की अनुपम देन है।

सारणी संख्या–3 धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रमांक	धर्म	संख्या	प्रतिशत
1.	हिन्दू	46	92
2.	मुस्लिम	4	8.00
योग –		50	100

सारणी क्रमांक 3 में धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं के दो समूह बनाये गये है। जिनमें हिन्दू और मुस्लिम है। जिनमें अधिकांश हिन्दू धर्मावलम्बी जिसका प्रतिशत 92 प्रतिशत है। जबकि मुस्लिम धर्म मानने वालों का 8.00 प्रतिशत है। अतः नगरीय क्षेत्र में हिन्दू धर्म मानने वाले की सख्या अधिकतम है।

जाति– जाति भारतीय सामाजिक व्यवस्था की प्रमुख संख्या के रूप में जानी जाती है। जाति एक आनुवांशिक सामाजिक समूह है जो अपने सदस्यों को सामाजिक गतिशीलता अर्थात् सामाजिक प्रस्थिति बदलने की अनुमति प्रदान नहीं करता है। जाति एक बंद प्रस्थिति समूह है क्रोबर के अनुसार–जाति एक एथनिक या सांस्कृतिक ईकाई का अन्तवैवाहिक और वंशानुक्रमण समूह है इसका ऊँचा या नीचा स्थान सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर निर्धारित किया जाता है।'' वही सामाजिक वर्ग, व्यक्ति की शैक्षणिक, आर्थिक और प्रतिष्ठा प्रस्थिति में सापेक्ष रूप से समान होते है अर्थात इन्हे जीवन के एक समान अवसर प्राप्त है। जाति व्यवस्था हिन्दुओं के सामाजिक जीवन में एक अलग प्रकार की विशेषता है। यह व्यक्ति और समूह दोनों की प्रस्थिति एवं भूमिका का निर्धारण करने वाली एक संस्था है। प्रस्तुत अध्ययन नगरीय समुदाय पर आधारित है जहाँ जाति संरचना जटिल और स्थिर होती है। अध्ययन ईकाई की जातिगत स्थिति अध्ययन के लिए आवश्यक तत्व है। जिससे उनकी जातीय प्रस्थिति ज्ञात होता है।

सारणी संख्या–4 जाति के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रमांक	**जाति**	**संख्या**	**प्रतिशत**
1.	**अनुसूचित /जनजाति**	**25**	**50.00**
2.	**पिछड़ा वर्ग**	**20**	**40.00**
3.	**सामान्य**	**5**	**10.00**
योग –		**50**	**100**

सारणी क्रमांक 4 में जाति के आधार पर उत्तरदाताओं को तीन समूहों में विभाजित किया गया है जिसमें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति, पिछड़ी जाति और सामान्य जाति है। सबसे ज्यादा उत्तर दाता अनुसूचित जाति/जनजाति के पाये गये जिनका प्रतिशत 50.00 है। 40.00 प्रतिशत उत्तरदाता अन्य पिछड़ी जाति से सम्बन्धित है तथा सबसे कम सामान्य जाति के है जो 10.00 प्रतिशत ही है। अतः सार रूप में कहा जा सकता है कि अध्ययन ईकाई के रूप में सबसे ज्यादा अनुसूचित जाति/जनजाति तथा अन्य पिछड़ी जाति के व्यक्ति है तथा सबसे कम सामान्य जाति के व्यक्ति है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति एवं शैक्षिक स्तर :–

वैवाहिक स्थिति–परम्परागत रूप में विवाह को स्त्री और पुरुष की भूमिकाओं की व्यवस्था के रूप में देखा जाता है जिनके संयोग को पति पत्नी के रूप में समाज द्वारा मान्यता दी गयी हो। इस व्यवस्था के संतुलन के लिए दो सहयोगियों के बीच अनुकूलन की आवश्यकता होती है ताकि एक की भूमिका अदायगी दूसरे की भूमिका अपेक्षा से मेल खाती हो।

विवाह भिन्न – भिन्न समाजों में भिन्न – भिन्न प्रकार के पाये जाते है। अतः यह एक प्रकार की सांस्कृतिक संस्था है। भारतीय हिन्दू समाज में विवाह एक धार्मिक संस्कार एवं जीवनभर का एक सामाजिक बन्धन है, जिन्हें हिन्दू सामाजिक मूल्यों के अनुसार किसी भी स्थिती में तोड़ना उचित नहीं माना जाता है। समाज में विवाहितों की अपनी एक अलग जिम्मेदारी होती है, साथ ही उन्हे समाज की विशेष अपेक्षाओं के संदर्भ कें कार्य करना पड़ता है। इस प्रकार विवाह व्यक्ति की व्यक्तिगत संतुष्टि तथा उसके सामाजिक दायित्वों के विस्तार का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रस्तुत अध्ययन में परिवार का विस्तार विवाह के पश्चात ही घटित हेाता है विवाह एवं सामाजिक मान्यता के पश्चात परिवार जैसी समिति विकसित होती है। इस संदर्भ में जो प्राप्त आकड़े है। उसे सारणी द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

सारणी संख्या–5 वैवाहिक स्थिति के आधार परउत्तरदाताओं कावर्गीकरण

क्रमांक	वैवाहिक स्थिति	संख्या	प्रतिशत
1.	अविवाहित	05	01.6
2.	विवाहित	301	94.1
3.	तलाकशुदा	11	3.4
4.	विधवा	03	0.9
योग –		320	100

उपर्युक्त सारणी संख्या–5 में वैवाहिक स्थिति के आधार पर तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। आकड़ों से ज्ञात होता है कि आधे से अधिक प्रदर्शित उत्तरदाता विवाहित है जिनका प्रतिशत 94. 1 है, 1. 6 प्रतिशत उत्तरदाता अविवाहित है जबकि 3.4 प्रतिशत तलाकशुदा है, तथा 0.9 प्रतिशत उत्तरदाता विधवा है। अतः हम कह सकते है अधिकांश व्यक्ति विवाहित है।

शैक्षणिक स्तर :–

आधुनिक विकासशील समाज में शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति का अधिकार बताया गया है। शिक्षा एक ऐसा महत्वपूर्ण कारक है जिसके द्वारा व्यक्ति को एक निश्चित दिशा मे सोचने एवं समझने की समझ उत्पन्न होती है। शिक्षा आवश्यक ज्ञान और दक्षता प्रदान करती है जो व्यक्ति को समाज में आदर्श रूप में कार्य करने योग्य बनाती हैं शिक्षा वैचारिक मान्यताओं से प्रेरित होती है जो समाज से ही ली जाती है किन्तु इसका कार्य सांस्कृतिक विरासत हस्तांतरण में और समाज के द्वारा धारित मूल्यों और आदर्शो को प्रोत्साहित करने तक ही समाप्त नहीं होता। वे समाज के अभिन्न और संवेदनशील अंग है। शिक्षा के समाज शास्त्र के अन्तगर्त प्रमुख रूप से समाज में शिक्षा की भूमिका के संदर्भ में अध्ययन किया जाता रहा है।पूंजी वादी समाज में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश हुए लुईस अल्थूजर कहते है कि शिक्षा के माध्यम से ही पूंजीवादी व्यवस्था के लिए पर्याप्त मात्रा में भ्रम शक्ति का पुर्नत्पादन होता है, अर्थात् पूंजीवाद समाज में शिक्षा की भूमिका योग्य व अनुशासित भ्रम शक्ति वर्ग के पुर्नत्पादन तक ही सीमित है। वही बोर्दियू का कहना है कि शैक्षणिक व्यवस्था की मुख्य भूमिका सांस्कृतिक व सामाजिक पुर्नत्पादन है दुरर्वीम के मत के विरोध में बोर्दियू कहते है कि शिक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण समाज की संस्कृति का अगली पीढ़ी को संचरण नही होता वरन समाज की 'प्रभुत्वशाली' वर्ग की संस्कृति ही शैक्षणिक के केन्द्र में रहती है और उसी का हस्तांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

होता है। भारत के संदर्भ में कहा जा सकता है कि जो उच्च जातियाँ शिक्षा को लेकर पहले से ही जागरूक थी उनमें शैक्षणिक स्तर का प्रतिशत अन्य जातियों की तुलना में उच्च है। नगरीय क्षेत्रों में अभी भी शिक्षा को लेकर जागरूक करने की आवश्यकता है। यहाँ व्यक्ति का शैक्षिक स्तर उतना नही होता जितना की शहरी व्यक्ति का। प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन इकाई का शैक्षिक स्तर ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

सारणीसंख्या–6 शैक्षणिक स्थिति के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्रमांक	शैक्षिक योग्यता	संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	139	45.4
2.	प्रइमरी	191	28.4
3.	मिडिल	38	11.9
4.	हाई स्कूल	3	0.9
5.	इण्टर	34	10.6
6.	स्नातक	8	2.5
7.	परास्नातक	7	
योग –		320	100

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 6 में उत्तरदाताओं के शैक्षणिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित तथ्यों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलकर आता है कि 45.4 प्रतिशत उत्तरदाता अशिक्षित है तथा 28.4 प्रतिशत उत्तरदाता केवल प्राइमरी स्तर तक ही शिक्षा प्राप्त की है। 11.9 प्रतिशत तथा 0.9 प्रतिशत क्रमशः मिडिल तथा हाईस्कूल तक के स्तर की शिक्षा ग्रहण की है। 10.6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इण्टर के स्तर तक तथा 2.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्नातक स्तर तक की शिक्षा ग्रहण की है केवल 2.3 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने परास्नातक स्तर तक की उच्च शिक्षा ग्रहण की है। अतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ज्यादातर उत्तरदाता अशिक्षित है। तथा बहुत ही कम व्यक्ति है जिन्होंने उच्च शिक्षा के स्तर तक शिक्षा ग्रहण की है।

सारणी संख्या–7 उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर एवं उनके लिंग के मध्य वर्गीकरण

क्रमांक	उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर	लिंग					
		पुरुष		महिला		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	अशिक्षित	74	41.3	65	46.1	139	43.4
2.	हाईस्कूल तक	72	40.2	60	42.6	132	41.2
3.	इण्टर या अधिक	33	18.4	16	11.3	49	15.3
योग –		320	100	320	100	320	100

उपर्युक्त तालिका क्रमांक 7 से उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर एवं उनके लिंग के वर्गीकरण से यह स्पष्ट होता है कि 41.3 प्रतिशत पुरुषों ने शिक्षा ग्रहण नहीं की तथा 46.1 प्रतिशत महिलओं ने शिक्षा ग्रहण नही की अर्थात वे अशिक्षित है। 40.2 प्रतिशत पुरुषो ने तथा 42.6 प्रतिशत महिलाओं ने हाईस्कूल के स्तर तक शिक्षा ग्रहण की है तथा 18.4 प्रतिशत पुरुषों ने तथा 11.3 प्रतिशत महिलाओं ने उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण की है। काई स्क्वायर (X^2) प्ररीक्षण इस तथ्य को सत्यापित करता है कि उत्तरदाताओं के मध्य सांख्यिकीय परीक्षण में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया हैं–

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

सारणीसंख्या– 8 शैक्षणिक स्तर का जाति समूह के आधार पर उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.	शैक्षणि स्तर	जाति समूह							
		अनुसूचित जाति/जनजाति		पिछड़ी जाति		सामान्य व उच्च जाति		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	अशिक्षि	100	63.7	32	24.6	7	21.2	139	43.4
2	हाईस्कूल तक	57	36.3	75	57.7	0	0	132	41.2
3	इण्टर या अधिक	0	0	23	17.7	26	78.8	49	15.3
योग –		157	100	130	100	33	100	320	100

जाति समूह के आधार पर उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर के वर्गीकरण से स्पष्ट होता है कि सामान्य व उच्च जाति के 78.8 प्रतिशत उत्तरदाता उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण किये तथा 21.2 प्रतिशत उच्च जाति के व्यक्ति अशिक्षित है। 63.7 प्रतिशत के अनुसूचित जाति/जनजाति के तथा 24.6 प्रतिशत पिछड़ी जाति के व्यक्ति अशिक्षित है। 36.3 प्रतिशत तथा 57.7 प्रतिशत क्रमशः अनुसूचित जाति/जनजाति तथा पिछड़ी जाति के उत्तरदाताएं हाई स्कूल तक की शिक्षा ग्रहण किए है। X^2 परीक्षण इस तथ्य को सत्यापित करता है कि उत्तरदाताओं के शैक्षणिक स्तर जाति समूहानुसार के प्रतिशतता में सार्थक अन्तर को दर्शाते है।अतः निष्कर्ष यह निकलता है कि उच्च व सामान्य जातियों में शिक्षा का स्तर अन्य पिछड़ी जाति तथा अनुसूचित जाति व जनजाति के अपेक्षा उच्च है।

86 उत्तरदाताओं के परिवारिक पृष्ठभूमि –परिवार एक सार्वभौमिक सामाजिक परिघटना है। परिवार सभी समाजिक समूहों में सार्वाधिक महत्वपूर्ण और व्यापक समूह है। जैविक दृष्टि से परिवार में स्त्री को यौन सम्बन्ध एवं सन्तान उत्पत्ति के लिए समाज की स्वीकृत प्राप्त होती है। मैकाइवर व पेज के अनुसार समाज में परिवार ही महत्वपूर्ण समूह है जो संस्कृति के सभी स्तरों पर किसी न किसी प्रकार का पारिवारिक संगठन अवश्य पाया जाता है।5 कर्वे ने भी बताया है कि भरतीय परिवार में संयुक्तता की प्रकृति का गुण है। अन्य विद्वानों ने भी परिवार रूपी संस्था के महत्व को स्वीकार किया है अर्थात यह सभी समाजों में पाया जाता है। वर्तमान समय में परिवार में अभूतपूर्व परिवर्तन आ रहा है, जो परिवार के सदस्यों के दृष्टिकोण, मूल्यो, विचारों इत्यादि में अनेकानेक परिवर्तन को जन्म दे रहे हे। परिवार के आपसी सम्बन्धों में एक प्रकार की उदासीनता और अलगाव की भावना आदिभी पायी जाती है। पारिवारिक क्रिया कलापों में असंतुलन की स्थिति ही परिवार को विघटन की अवस्था पर पहुँचाती है। प्रस्तुत अध्ययन परिवार के स्वरूप में होने वाले बदलाव को दर्शाते का प्रयास किया गया है, जिसके अन्तगर्त परिवार के मूल स्वरूप की स्थिति प्रस्तुत की गयी है।

सारणी संख्या–9 उत्तरदाताओंका परिवार के स्वरूप के आधार पर वर्गीकरण

क्रमांक	परिवार	संख्या	प्रतिशत
1	एकाकी	55	17.5
2	सयुक्त	265	82.5
योग –		320	100

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 3, February 2024

सारणी संख्या–9 तथ्यों से स्पष्ट होता है कि लगभग आधे से अधिक उत्तरदाताओं की परिवारिक संरचना का स्वरूप संयुक्त है जिसका प्रतिशत 82.8 है। जबकि 17.2 प्रतिशत उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप एकाकी पाया गया है। अतः यह स्पष्ट है कि नगरीय क्षेत्रों में संयुक्त परिवार की ही बहुलता है।

उपर्युक्त तथ्यों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि महिला परिवार में सामाजिक तौर से विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं का निर्वहन करती है। इस प्रकार से कह सकते हैं कि महिला परिवार की एक महत्वपूर्ण कड़ी है जिसके बिना परिवार का किसी भी प्रकार से उन्नति नहीं हो सकती चाहे पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, शैक्षिक, बौद्धिक व समाज में होने वाली प्रत्येक गतिविधि में वह अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

संदर्भ स्रोत :–

[1]. Oplor, M.E. and Singh, Rudradutta, Economic Political Social Change in a Village of North Central India, Human. Organization.

[2]. रावत, हरिकृष्ण,उच्चतर समाजशास्त्रीय विश्वकोश, रावत पब्लिकेशन, जयपुर,2011

[3]. अहूजा, राम, भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2011-

[4]. Harlambos, M. and Heald, R.M., Sociology: Theams and Perpoctive, Oxford University Press, New Delhi, 1997.

[5]. Maciver R.M. and Page C.H., Society : An Introductory Analysis, Macmillan & Co. Ltd, London, 1962.

[6]. अहुजा, राम, और अहूजा, मुकेश, समाजशास्त्र : विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य,रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2013